This question paper contains 3 printed pages.]

7758 *आपका अनुक्रमांक ....*

M.A. (एम.ए.) / II **A**

HINDI (हिन्दी)

Group B – Reetikaleen Kavya

वर्ग (ख) – रीतिकालीन काव्य

Paper 13 – Reeti Kavya Dhara : Lakshan Granth

प्रश्नपत्र 13 – रीतिकाव्यधारा : लक्षण ग्रन्थ

समय : 3 घण्टे *पूर्णांक : 50*

(इस प्रश्नपत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

नोट : *प्रश्नपत्र पर अंकित पूर्णांक एम.ए. हिन्दी परीक्षा के वर्ग 'ब' (स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग एवं नॉन-फॉर्मल सैल आदि) के परीक्षार्थियों के लिए मान्य है। वर्ग 'अ' (नियमित पूर्व विद्यार्थियों) के लिए इन अंकों का समानुपातिक पुनर्निर्धारण परीक्षाफल तैयार करते समय किया जाएगा।*

1. सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

(क) (i) 'केसवदास' बिरोधमय, रखियत बचन बिचारि।
तासों कहत बिरोध सब कबिकुल सुबुधि सुधारि॥

[P.T.O.

(ii) 'केसव' औरहि वस्तु में औरै कीजै तर्क।
उत्प्रेक्षा तासों कहैं जिनके बुद्धि सपर्क॥

अथवा 7

सोने से सोहने गातन सोहै सुहागिनि की अति सूही सुहाई।
देव जू आवै लगी अंखियान में देखत ही मुख की अरुनाई।
ज्यौं ज्यौं रंगे पर रंग निचोरत त्यों निचुरै अंग अंग निकाई।
दै छबि छापै करै मन छींट सु छीपनि बाल छिपै न छिपाई॥

(ख) 'सक्ति' कबित्त बनाइबे की जिहि जन्मछत्र में दीनी विधातैं।
काव्य की रीति सिख्यो सुकबीन सौं देखी सुनी बहुलोक की बातें।
दासजू जामें एकत्र ये तीन्यौं बने कविता मनरोचक तातैं।
एक बिना न चलै रथ जैसें बैल धुरंधर 'सूत' की चक्र निपातै॥

अथवा 7

(i) एक सुकीया की कही कबिन अवस्था तीन।
मुग्धा इक मध्या बहुरि पुनि प्रौढ़ा परबीन॥

(ii) झलकत आवै तरुनई नई जासु अंग अंग।
मुग्धा तासों कहत हैं जे प्रबीन रसरंग॥

2. 'कविप्रिया' के प्रतिपाद्य का विवेचन कीजिए।

अथवा 12

केशव के अभिव्यक्ति-विधान पर प्रकाश डालिए।

3. रीतिकालीन आचार्य परंपरा में देव का स्थान निर्धारित कीजिए।

अथवा 12

देव के भाषा-शिल्प पर विचार कीजिए।

4. भिखारीदास के 'काव्य-निर्णय' में वर्णित विषयों पर विचार करते हुए उनके मौलिक प्रदेश पर प्रकाश डालिए।

अथवा 12

पद्माकर के नायिका-भेद-निरूपण पर विचार करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य की समीक्षा कीजिए।